December 2014
DPL Examination
प्रमुख प्राकृत भाषाएँ एवं प्राकृत साहित्य की विविध विधाएँ
Paper - DPL 01
Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

There are 50 multiple choice questioins in this paper. Attempt all questions. Each question carries 2 marks. You have to answer the question by marketing A/B/C or D in the OMR Sheet supplied to you alongwith the question paper. You must also darken the relevant option by making use of H.B. Pencil/Blue Pen No. marks will be deducted for wrong answer.

यह प्रश्नपत्र कुल 50 वैकल्पिक प्रश्नों का है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकांे का है। आपको प्रश्नों के उŸार अ/ब/स अथवा द का चयन करते हुए प्रश्न पत्र के साथ दी ओ. एम आर. शीट में दर्ज करने हैं साथ ही सम्बन्धित गोले को भी एच. बी. पेन्सिल नीले बाल पेन अथवा काले बाल पेन से भरा जाना है। गलत उŸार के लिये अंकों की कटौती नहीं की जायेगी।

1. नय के अन्तर्गत परिगणित नहीं है-
   ((अ) शब्द नय (ब) सांख्य सूत्र
   (स) संग्रह नय (द) नैगम नय
2. सम्मइपयरण (सन्मतिप्रकरण) के रचयिता हैं-
   (अ) आचार्य हेमचन्द्र (ब) आचार्य सिद्धसेनसूरि दिवाकर
   (स) अकलंक (द) समंतभद्र
3. इस कर्म से जीव को सुख-दुःख की प्राप्ति होती है-
   (अ) अन्तराय कर्म (ब) दर्शनावरणीय
   (स) आयुष्य कर्म (द) वेदनीय कर्म
4. जिससे कर्मों की स्थिति एवं अनुभाग (तीव्रता-मंदता) में वृद्धि होती है वह करण है-
   (अ) निकाचन करण (ब) उद्वर्तना करण
   (स) उपशामना करण (द) बंधन करण
5. आहार, शरीर-सज्जा, मैथुन सेवन आदि का त्याग कर धर्म को पुष्ट करने वाला व्रत है-
   (अ) पौषध (ब) उपभोग-परिभोग-परिमाण
   (स) दिग्व्रत (द) सामायिक
6. अंगविज्जा नामक ग्रन्थ में अध्यायों की संख्या है-
   (अ) 50 (ब) 60
   (स) 30 (द) 65
7. जिस तीर्थंकर ने जग के प्राणियों के हित के लिये असि, मसि, कृषि, वाणिज्य आदि षड् विद्याओं की शिक्षा दी, वह है-

(अ) ऋषभदेव (ब) पाश्र्वनाथ

(स) नेमिनाथ (द) महावीर

8. प्राकृत साहित्य के प्रथम कोश पाइयलच्छीनाममाला के रचयिता हैं-

(अ) धनपाल (ब) महेन्द्रसूरि

(स) जिनचन्द्रसूरि (द) जिनेश्वरसूरि

9. पं. हरगोविन्ददास त्रिकमचन्दसेठ द्वारा रचित प्राकृत का शब्द कोश है-

(अ) पाइयसद्दमहण्णव (ब) नालन्दा हिन्दी कोश

(स) देशी शब्द कोश (द) प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी कोश

10. सूत्र में निश्चय किया हुआ अर्थ जिसमें निबद्ध हो उसे कहते हैं-

(अ) भाष्य (ब) चूर्णि

(स) निर्युक्ति (द) टीका

11. तीसरी शताब्दी में रचित दशवैकालिक चूर्णि के रचयिता है-

(अ) अगस्त्यसिंह (ब) नेमिचन्द्रसूरि

(स) शीलांकाचार्य (द) अभयदेवसूरि

12. जीतव्यवहार के आधार पर जो प्रायश्चित दिये जाते हैं उनका वर्णन जिस भाष्य में है वह है-

(अ) जीतकल्पभाष्य (ब) पंचकल्पभाष्य

(स) व्यवहारभाष्य (द) विशेषआवश्यकभाष्य

13. आवश्यकनिर्युक्ति के जिस प्रकरण में अर्हत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय और साधु के स्वरूप पर विचार किया गया है, वह है-

(अ) सामायिक (ब) नमस्कारप्रकरण

(स) चतुर्विंशस्तव (द) प्रतिक्रमण

14. भगवान महावीर द्वारा उपदेशित श्वेताम्बर आगमों की भाषा है-

(अ) शौरसेनी प्राकृत (ब) अर्धमागधी प्राकृत

(स) मागधी प्राकृत (द) महाराष्ट्रि प्राकृत

15. 'इन्ट्रोडक्शन टू प्राकृत' के रचयिता हैं-

(अ) मैक्समूलर (ब) आर. पिशल

(स) जेकोबी (द) वेबर

16. अर्धमागधी प्राकृत में 'कम्म' शब्द का तृतीया एकवचन में जो रूप पाया जाता है, वह है-

(अ) कम्मुणा (ब) कम्मए

(स) कम्मुणो (द) कम्मेसु

17. अकारान्त पुल्लिंग शब्द 'पुरिस' का अर्धमागधी भाषा में प्रथमा विभक्ति एकवचन में जो रूप बनता है, वह है-

(अ) पुलिशे (ब) पुरिस्से

(स) पुरिसे (द) पुलिसे

18. श्रावक के विभिन्न व्रतों एवं साधना का सुन्दर समन्वय करने वाला अंग आगम है-

(अ) उपाशकदशांग (ब) सूत्रकृतांग

(स) विपाकसूत्र (द) स्थानांग

19. वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एक वचन में 'दि', 'दे' प्रत्ययों का प्रयोग जिस प्राकृत की विशेषता है, वह है-

(अ) अर्धमागधी (ब) शौरसेनी

(स) महाराष्ट्री (द) अपभ्रंश

20. 'धम्मरसायण' नामक सिद्धान्त ग्रन्थ के रचयिता हैं-

(अ) पद्मनन्दि मुनि (ब) यतिवृषभ

(स) आचार्य कुन्दकुन्द (द) गुणधराचार्य

21. दिगम्बर परंपरा की भाषा है-

(अ) अर्धमागधी (ब) अपभ्रंश

(स) मागधी प्राकृत (द) शौरसेनी प्राकृत

22. कर्मसिद्धान्त, गुणस्थान और जीव की विभिन्न अवस्थाओं का सांगोपांग वर्णन करने वाला शौरसेनी आगम ग्रन्थ है-

(अ) षट्खण्डागम (ब) प्रवचनसार

(स) रयणसार (द) समयसार

23. सेतुबन्ध, गाथासप्तशती, गउडवहो आदि ग्रन्थों की भाषा है-

(अ) महाराष्ट्री प्राकृत (ब) अपभ्रंश

(स) शोरसैनी प्राकृत (द) मागधी प्राकृत

24.. 'गउडवहो' के रचयिता हैं-

(अ) वाक्पतिराज (ब) भूषण भट्ट

(स) कोऊहल (द) जयवल्लभ

25. गउडवहो में सर्गों के स्थान पर जिस आधार पर विभाजन हु आहै, वह है-

(अ) अध्ययन (ब) प्रस्ताव

(स) शतक (द) कुलक

26. कोऊहल की रचना है-

(अ) लीलावई (ब) गाथासप्तशती

(स) वज्जालग्ग (द) सेतुबन्ध

27. जिस कथा में देवलोक और मानवलोक के पात्र होते हैं वह कहलाती है-

(अ) दिव्य मानुषी कथा (ब) दिव्य कथा

(स) धार्मिक कथा · (द) लौकिक कथा

28. पैशाची प्राकृत जिन विभक्तियों के लिये समान प्रत्यय हैं, वह है-

(अ) पंचमी और चतुर्थी (ब) प्रथमा और सप्तमी

(स) द्वितीया और चतुर्थी (द) चतुर्थी और षष्ठी

29. राजा के लिये चूलिका पैशाची भाषा में जो शब्द प्रयुक्त होता है वह है-

(अ) लाखा (ब) लाचा

(स) राचा (द) लाजा

30. 'प्राकृत सर्वस्व' के रचयिता हैं-

(अ) आचार्य वररुचि (ब) आचार्य हेमचन्द्र

(स) भद्रबाहु (द) मार्कण्डेय

31. क्रिया के अन्त में प्रत्यय लगने पर जो विशेषण या अव्यय बनता है, वह कहलाता है-

(अ) विशेषण (ब) अव्यय

(स) सर्वनाम (द) कृदन्त

32. घटनाओं का अभिनय कहलाता है-

(अ) कथा (ब) नाट्य

(स) चरित (द) महाकाव्य

33. 'स्वप्नवासवदŸा' नामक नाटक का नायक है-

(अ) शकार (ब) उदयन

(स) राक्षस (द) चारुदŸा

34. 'मुद्राराक्षस' नाटक के रचयिता हैं-

(अ) अश्वसेन (ब) भास

(स) विशाखादŸा (द) शूद्रक

35. वह नाटक जिसके रचयिता महाकवि कालिदास नहीं है-

(अ) मृच्छकटिक (ब) विक्रमोर्वशीय

(स) मालविकाग्निमित्र (द) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

36. छन्दबद्ध रचना कहलाती है-

(अ) पद्य (ब) उपन्यास

(स) गद्य (द) इनमें से कोई नहीं

37. सेतुबन्ध नामक महाकाव्य की कथा का आधार वाल्मीकि रामायण का काण्ड है-

(अ) लंकाकाण्ड (ब) किष्किन्धाकाण्ड

(स) सुन्दरकाण्ड (द) युद्धकाण्ड

38. सेतुबन्ध नामक महाकाव्य की कथा का प्रारम्भ जिस ऋतु से होता है वह है-

(अ) बसन्त (ब) ग्रीष्म

(स) हेमन्त (द) शरद्

39. गउडवहो नामक महाकाव्य के आरम्भ में कवि ने जिस राजा के गुणों का वर्णन किया है, वह है-

(अ) राम (ब) सातवाहन

(स) यशोवर्मा (द) मगधाधिपति

40. मानव जीवन के किसी एक साधारण अथवा मार्मिक पक्ष की अनुभूति का काव्यात्मक व्यंजन कराने वाला प्रबन्धकाव्य है-

(अ) कथाकाव्य (ब) महाकाव्य

(स) चरितकाव्य (द) खंडकाव्य

41. गाथासप्तशती का प्राचीन नाम है-

(अ) मुक्तककोस (ब) गाहाकोस

(स) गउडवहो (द) कहाकोस

42. रात्रि के सघन अंधकार में नायिका को प्रियतम से मिलने जाना है अतः वह घर में जिस प्रकार चलने का अभ्यास कर रही है, वह है-

(अ) नाच नाच कर (ब) आंख मिचकर

(स) हंस हंस कर (द) आंख खोलकर

43. प्रियतम के लौटने पर भी नायिका वस्त्र और आभूषणों को धारण नहीं करती क्योंकि-

(अ) उसका पड़ौसी नहीं लौटा (ब) उसका पुत्र नहीं लौटा

(स) उसका भाई नहीं लौटा (द) उसका पिता नहीं लौटा

44.. चन्दन के वृक्ष के समान फल रहित होने पर भी सज्जन व्यक्ति जिसके द्वारा परोपकार करते हैं, वह है-

(अ) धन से (ब) भावना से

(स) मन से (द) शरीर से

45. पउमचरियं का समय है लगभग-

(अ) प्रथम शताब्दी से पूर्व (ब) प्रथम द्वितीय शताब्दी

(स) तृतीय चतुर्थी शताब्दी (द) द्वितीय तृतीय शताब्दी

46. रामकथा को प्रस्तुत करने वाला प्राकृत साहित्य का आदिकाव्य है-

(अ) पउमचरियं (ब) आदि पुराण

(स) तुलसी रामायण (द) हरिवंश पुराण

47. सुरसुन्दरीचरियं के रचयिता हैं-

(अ) जिनेश्वर सूरि (ब) जिनचन्द्र सूरि

(स) धनेश्वर सूरि (द) जिनदŸा सूरि

(स) स्वयंभूरमण (द) लंका

48. सुरसुन्दरीचरियं में धनदेव सेठ ने जिसकी सहायता से चित्रवेग नामक विधाधर को नागपाश से छुड़ाया, वह है-

(अ) नागमणि (ब) चिन्तामणि

(स) दिव्य मणि (द) पुष्पमणि

49. प्राकृत भाषा की सर्वप्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ सट्टक रचना है-

(अ) सुरसुन्दरीचरियं (ब) चन्द्रलेखा

(स) कुवलयमाला (द) कर्पूरमंजरी

50. बालरामायण में राजशेखर ने जिस कथा को प्रस्तुत किया है, वह है-

(अ) महाभारत की कथा (ब) रामायण की कथा

(स) लव कुश की कथा (द) विष्णु की कथा

51. आचार्य सिद्धसेन ने कौनसे नय को स्वीकार नहीं किया है-

(अ) शब्द नय (ब) व्यवहार नय

(स) संग्रह नय (द) नैगम नय

52. भेद का बोध कराने वाला नय है-

(अ) व्यवहार नय (ब) शब्द नय

(स) संग्रह नय (द) ऋजुसूत्रनय

53. सन्मतिप्रकरण में गाथाओं की संख्या है-

(अ) 150 (ब) 132

(स) 136 (द) 166

54. दान, लाभ, भोग, उपभोग एवं वीर्य में विघ्न का उत्पन्न करने वाला कर्म है-

(अ) अन्तराय कर्म (ब) दर्शनावरणीय

(स) आयुष्य कर्म (द) वेदनीय कर्म

55. जीव के जिस परिणाम विशेष से बंधे हुए कर्मों की स्थिति एवं अनुभाग (तीव्रता-मंदता) में कमी आये, वह करण है-

(अ) निकाचन करण (ब) उद्वर्तना करण

(स) अपवर्तना करण (द) बंधन करण

56. अंगविज्जा में उल्लेखित सुन्दर आभूषण जिसमें सिंह के मुख की आकृति बनी रहती थी, वह है-

(अ) कंगन (ब) मुकुट

(स) सिंहभंडक (द) केवूर

57. संस्कृत में शब्दकोश की प्राचीनतम परंपरा जिस युग से प्रारम्भ होती है वह है-

(अ) कालिदास युग (ब) वैदिक युग

(स) महावीर युग (द) योगलिक युग

58. धनपाल द्वारा रचित प्राकृत साहित्य का कोश है-

(अ) देशीनाममाला (ब) पाइयलच्छीनाममाला

(स) प्राकृतसूक्तरक्तमाला (द) पाइयसद्दमहण्णव

59. अमर कोश की भाषा है-

(अ) संस्कृत (ब) उर्दू

(स) हिन्दी (द) प्राकृत

60. सामान्य रूप से चूर्णियों के कर्ता माने जाते हैं-

(अ) पुष्पदन्त (ब) जिनदासगणि महŸार

(स) भूतबलि (द) आचार्य हेमचन्द्र

61. नवांगी टीकाकार के रूप में प्रसिद्ध आचार्य हैं-

(अ) आचार्य हेमचन्द्र (ब) नेमिचन्द्रसूरि

(स) शीलांकाचार्य (द) अभयदेवसूरि

62. जीतकल्पभाष्य के रचयिता हैं-

(अ) जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ब) देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

(स) भद्रबाहु (द) संघदासगणि

63. आवश्यक, दशवैकालिक, नंदी एंव अनुयोगद्वार पर जिस आचार्य की टीकायें उपलब्ध है, वह है-

(अ) आचार्य हरिभद्र (ब) देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

(स) भद्रबाहु (द) संघदासगणि

64. भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात वल्लभी ने श्वेताम्बर आगमों को व्यवस्थित करने वाले आचार्य हैंै-

(अ) आचार्य वररूचि (ब) देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

(स) भद्रबाहु (द) संघदासगणि

65. वेबर ने प्राकृत की विशेषताओं को बताने के लिये जिस ग्रन्थ की रचना की वह है-

(अ) जैन सिद्धान्त कौमुदी (ब) इन्ट्रोडक्शन टू प्राकृत

(स) कम्परेटिव ग्रामर आॅफ दी प्राकृत लैंग्वेजेज (द) प्राकृत लक्षण

66. अर्धमागधी प्राकृत में 'धम्म' शब्द का तृतीया एकवचन में जो रूप पाया जाता है, वह है-

(अ) धम्मुणा (ब) धम्मे

(स) धम्मुणो (द) धम्मेसु

67. मागधी भाषा में 'र' के स्थान पर सर्वत्र जो वर्ण पाया जाता है, वह है-

(अ) ल (ब) ङ

(स) ड (द) ढ

68. उपांग साहित्य में ग्रन्थों की संख्या है-

(अ) 8 (ब) 10

(स) 11 (द) 12

69. प्राकृत के महाकाव्यों, चरितकाव्यों आदि की रचना जिस प्राकृत से हु ईवह है-

(अ) अपभ्रंश (ब) प्रथम स्तरीय प्राकृत

(स) तृतीय स्तरीय प्राकृत (द) द्वितीय स्तरीय प्राकृत

70. 'तिलोयपण्णति' नामक सिद्धान्त ग्रन्थ के रचयिता हैं-

(अ) यतिवृषभ (ब) वट्टकेर

(स) आचार्य कुन्दकुन्द (द) गुणधराचार्य

71. प्राकृत व्याकरण ग्रन्थ प्राकृतसर्वस्व के रचयिता हैं-

(अ) वररुचि (ब) मार्कण्डेय

(स) हेमचन्द्र (द) त्रिविक्रम

72. प्रवचनसार में आत्मा के जिस मूल गुण के स्वरूप का सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है वह है-

(अ) चारित्र (ब) दर्शन

(स) ज्ञान (द) सुख

73. 'संक्षिप्तसार' नामक प्राकृत व्याकरण के रचयिता हैं-

(अ) क्रमदीश्वर (ब) लक्ष्मीधर

(स) त्रिविक्रम (द) आचार्य हेमचन्द्र

74. 'लीलावई' नामक काव्य के रचयिता हैं-

(अ) राजशेखर (ब) भूषण भट्ट

(स) कोऊहल (द) जयवल्लभ

75. 'वज्जालग्ग' नामक रचना में वज्जा का अर्थ है-

(अ) अध्ययन (ब) अधिकार या प्रस्ताव

(स) शतक (द) कुलक

76. डाॅ. हाॅर्नलि के अनुसार महाराष्ट्री का अर्थ है-

(अ) मराठों की भाषा (ब) महाराष्ट्र की भाषा

(स) विशाल राष्ट्र की भाषा • (द) आर्यों की भाषा

77. पैशाची प्राकृत में भूतकाल को व्यक्त करने के लिये जिस कृदन्त का बहु लतासे प्रयोग किया जाता है, वह है-

(अ) भूतकालिक कृदन्त (ब) भविष्यत कृदन्त

(स) वर्तमानकालिक कृदन्त (द) विधि कृदन्त

78. पैशाची प्राकृत में अकारान्त शब्द 'जिन' का पंचमी एकवचन में जो रूप बनता है, वह है-

(अ) जिनातु (ब) जिनाणु

(स) जिनादु (द) जिनाउ

79. आचार्य वररुचि द्वारा प्राकृत का जो व्याकरण लिखा गया, वह है-

(अ) प्राकृत प्रकाश (ब) काव्यालंकार

(स) प्राकृत लक्षण (द) प्राकृत सर्वस्व

80. महाकवि भास द्वारा रचित नाटकों की संख्या है-

(अ) तेरह (ब) दस

(स) बारह (द) आठ

81. 'मृच्छकटिकम्' नामक नाटक के रचयिता हैं-

(अ) अश्वसेन (ब) भास

(स) कालिदास (द) शूद्रक

82. भास के नाटकों में पायी जाने वाली प्राकृतें सामान्यतः हैं-

(अ) अर्धमागधी (ब) मागधी

(स) अपभ्रंश (द) शौरसैनी

83. मृच्छकटिक नामक नाटक में चारुदŸा के पुत्र का नाम है-

(अ) रोहित (ब) रोहसेन

(स) रौनक (द) रोहक

84. गद्य पद्य मिश्रित काव्यों की विधा है-

(अ) महाकाव्य (ब) इनमें से कोई नहीं

(स) खण्डकाव्य (द) चम्पूकाव्य

85. सेतुबन्ध महाकाव्य में रामावतार के रूप में जिस भगवान की लीलाओं का वर्णन है-

(अ) नारायण (ब) विष्णु

(स) शिव (द) कृष्ण

86. सेतुबन्ध नामक महाकाव्य का प्रधान रस है-

(अ) भयानक (ब) वीर

(स) अदभुद् (द) श्रंृगार

87. लीलावई नामक महाकाव्य का नायक है-

(अ) सातवाहन (ब) देवराज

(स) सिंहलराज (द) नन्दीवर्धन

88. निम्न में से कौनसी रचना रामपाणिवाद की नहीं है-

(अ) शिवपुराण (ब) उषाणिरूद्ध

(स) धूर्ताख्यान (द) कंसवहो

89. गाथासप्तशती के रचयिता हैं-

(अ) महाकवि प्रवरसेन प्रथम (ब) महाकवि प्रवरसेन द्वितीय

(स) महाकवि वत्सलहाल (द) महाकवि रूद्रसेन

90. ग्राम्यबाला के मुख पर हल्की सी कालिमा लग जाती है तो उसका पति उसके मुख की तुलना जिस उपमान से करता है वह है-

(अ) चन्द्रमा (ब) रंभा

(स) सूर्य (द) हिरन

91. जब सम्पूर्ण चन्द्र भी नायिका के मुख की समानता नहीं प्राप्त कर सका तब विधाता के द्वारा नवीन चन्द्रमा का सृजन करने के लिये चन्द्रमा को बार-बार किया गया-

(अ) मंडित (ब) श्रृंगारित

(स) अलंकृत (द) खंडित

92. धीर पुरुष भाग्य के सहारे नहीं बैठता वह सदैव प्रवृŸा रहता है -

(अ) नीति में (ब) धैर्य में

(स) धर्म में (द) पुरुषार्थ में·

93. पउमचरियं की कथा वस्तु का आधार है-

(अ) वाल्मीकि रामायण (ब) आदि पुराण

(स) रामचरित मानस (द) हरिवंश पुराण

94. विमलसूरि द्वारा रचित पउमचरियं के अनुसार राम जिस कारण से वन में जाते हैं, वह है-

(अ) पिता की आज्ञा (ब) जनता की आज्ञा

(स) कैकेयी की आज्ञा (द) स्वेच्छा से

95.. सुरसुन्दरीचरियंमें धनदेव सेठ ने जिस विधाधर को नागपाश से छुड़ाया, वह है-

(अ) चित्रवेग (ब) मकरकेतु

(स) मित्रवेग (द) संभूति

96. कर्पूरमंजरी के रचयिता राजशेखर का वंश है-

(अ) मुगल वंश (ब) चैहान

(स) यायावर (द) राठौर

97. आचार्य राजशेखर द्वारा रचित 'प्रचण्ड पाण्डव' नामक नाटक जिस कथा पर आधारित है, वह है-

(अ) महाभारत की कथा (ब) रामायण की कथा

(स) कृष्ण की कथा (द) विष्णु की कथा

98. कर्पूरमंजरी सट्टक में तांत्रिक विद्या विशारद सिद्धयोगी पात्र का नाम है-

(अ) भैरवानन्द (ब) रत्नचण्ड

(स) कपिंजल (द) दैत्यानंद

99. व्यवहारभाष्य में आई 'भिखारी का सपना' नामक कथा जिस किस्से के रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध है, वह है-

(अ) बीरबल के किस्से (ब) शाहजहां के किस्से

(स) शेखचिल्ली के किस्से (द) तैनालीराम के किस्से

100. तरंगवती की सम्पूर्ण कथा वर्णित है-

(अ) द्वितीय पुरुष में (ब) उŸाम पुरुष मंे

(स) मध्यम पुरुष में (द) अन्य पुरुष में

101. भेद का बोध कराने वाला नय है-

(अ) व्यवहार नय (ब) शब्द नय

(स) संग्रह नय (द) ऋजुसूत्रनय

102. एक बार प्रकट होने के पश्चात् कभी समाप्त नहीं होने वाला ज्ञान है-

(अ) मतिज्ञान (ब) श्रुतज्ञान

(स) अवधिज्ञान (द) अनंतज्ञान

103. यह कर्म जीव की आन्तरिक दृष्टि को मलिन रखता है तथा उसे क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय से आविष्ट रखता है -

(अ) दर्शनावरण (ब) ज्ञानावरण

(स) मोहनीय कर्म (द) वेदनीय कर्म

104. जीव के जिस परिणाम विशेष से कर्म की उद्वर्तना, अपवर्तना, संक्रमण आदि करण न हो तथा जिसका अवश्य वेदन किया जाये वह करण है-

(अ) निकाचन करण (ब) निधति करण

(स) अपवर्तना करण (द) बंधन करण

105. सावयपण्णŸाी (श्रावकप्रज्ञप्ति) के रचयिता हैं-

(अ) विमलसूरि (ब) उमास्वाति

(स) आचार्य हेमचन्द्र (द) हरिभद्रसूरि

106.. निरुक्त तथा निघण्टु जिस परंपरा के कोश हैं वह है-

(अ) मुस्लिम (ब) जैन

(स) वैदिक (द) बौद्ध

107. पाइयसद्दमहण्णव नामक कोश ग्रन्थ के रचयिता हैं-

(अ) डाॅ. के. आर. चन्द्र (ब) प. हरगोविन्द दास त्रिकमचंद सेठ

(स) आचार्य हेमचन्द्र (द) राजेन्द्रसूरि

108. धनपाल ने पाइयलच्छीनामवाला की रचना जिसके लिये की वह है-

(अ) पत्नि (ब) बड़ी बहन सुन्दरी

(स) पुत्र (द) छोटी बहन सुन्दरी

109. जिस चूर्णि में केवलज्ञान व केवलदर्शन के क्रम पर विशेष चर्चा की गई वह है-

(अ) दशवैकालिक चूर्णि (ब) आचारांग चूर्णि

(स) नंदी चूर्णि (द) निशीथ चूर्णि

110. श्रमण जीवन की सफल साधना के लिये अनिवार्य सभी प्रकार के विधि विधानों का संक्षिप्त एवं सुव्यस्थित निरूपण करने वाली निर्युक्ति है-

(अ) सूत्रकृतांगनिर्युक्ति (ब) दशवैकालिकनिर्युक्ति

(स) आवश्यकनिर्युक्ति (द) ऋषिभाषित

111. विशेषआवश्यकभाष्य के रचयिता हैं-

(अ) संघदासगणि (ब) देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

(स) भद्रबाहु (द) जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

112. आचार्य हेमचन्द्र ने जिस प्राकृत व्याकरण की रचना की गई वह है-

(अ) प्राकृत प्रकाश (ब) सिद्धहेमशब्दानुशासन

(स) प्राकृत लक्षण (द) प्राकृत सर्वस्व

113. कम्परेटिव ग्रामर आॅफ दी प्राकृत लैंग्वेजेज के रचयिता हैं-

(अ) मैक्समूलर (ब) आर. पिशल

(स) जेकोबी (द) वेबर

114. वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एक वचन में 'ति' प्रत्यय का प्रयोग जिस प्राकृत की विशेषता है, वह है-

(अ) अर्धमागधी (ब) मागधी

(स) महाराष्ट्रि (द) अपभ्रंश

115. मागधी भाषा में 'स' के स्थान पर सर्वत्र जो वर्ण पाया जाता है वह है-

(अ) श (ब) ष

(स) स (द) ह

116. श्रमण जीवन के लिये नित्य आवश्यक छः क्रियाओं का विधान करने वाला सूत्र है-

(अ) सूत्रकृतांग (ब) आवश्यकसूत्र

(स) विपाकसूत्र (द) निशीथसूत्र

117. 'कषायपाहुड' नामक सिद्धान्त ग्रन्थ के रचयिता हैं-

(अ) नेमिचन्द्रसूरि (ब) आचार्य धरसेन

(स) आचार्य कुन्दकुन्द (द) गुणधराचार्य

118. 'मूलाचार' नामक सिद्धान्त ग्रन्थ के रचयिता हैं-

(अ) यतिवृषभ (ब) वट्टकेर

(स) आचार्य कुन्दकुन्द (द) गुणधराचार्य

119. कषायपाहुड पर रचित जयधवला नामक विशाल टीका के रचयिता हैं-

(अ) आचार्य वटकेर (ब) आचार्य वीरसेन

(स) आचार्य शिवार्य (द) आचार्य जयसेन

120. 'षडभाषाचन्द्रिका' नामक प्राकृत व्याकरण के रचयिता हैं-

(अ) मार्कण्डेय (ब) लक्ष्मीधर

(स) त्रिविक्रम (द) आचार्य हेमचन्द्र

121. 'कंसवहो' नामक काव्य के रचयिता हैं-

(अ) राजशेखर (ब) रामपाणिवाद

(स) कौऊहल (द) जयवल्लभ

122. जिस काव्य का प्रत्येक पद्य दूसरे पद्य की अपेक्षा के बिना स्वतंत्र रूप से रसानुभूति कराने में सक्षम होता है, वह काव्य है-

(अ) चरितकाव्य (ब) मुक्तक

(स) महाकाव्य (द) कथाकाव्य

123. पैशाची प्राकृत में 'पढ' क्रिया का सम्बन्धक भूतकालिक कृदन्त में जो रूप बनता है, वह है-

(अ) पढिऊण (ब) पढिŸाए

(स) पढिदूण (द) पढिद्धून

124. आचार्य मार्कण्डेय द्वारा प्राकृत का जो व्याकरण लिखा गया, वह है-

(अ) प्राकृत प्रकाश (ब) काव्यालंकार

(स) प्राकृत लक्षण (द) प्राकृत सर्वस्व

125. 'स्वप्नवासवदŸाम्' नामक नाटक के रचयिता हैं-

(अ) अश्वसेन (ब) भास

(स) कालिदास (द) शूद्रक

126. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नामक नाटक के रचयिता हैं-

(अ) चाणक्य (ब) भास

(स) कालिदास (द) शूद्रक

127. मुद्रा के द्वारा राक्षस के निग्रह की घटना जिस नाटक में अंकित है वह है-

(अ) मृच्छकटिक (ब) मुद्राराक्षस

(स) चारुदŸा (द) बालचरित

128. प्राकृत भाषाआंे का प्रथम नाटकीय प्रयोग जिस विधा में उपलब्ध होता है वह है-

(अ) संस्कृत नाटक (ब) प्राकृत चरित ग्रन्थ

(स) प्राकृत सट्टक (द) प्राकृत कथा ग्रन्थ

129. काव्यशास्त्र में वर्णित चम्पूकाव्य के सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त सबसे पहला चम्पू है-

(अ) नलचम्पू (ब) मृच्छकटिक

(स) कुवलयमालाचम्पू (द) लीलावइचम्पू

130. राम द्वारा बाण चलाने पर सागर हो जाता है-

(अ) प्रसन्न (ब) विनीत

(स) क्षुब्ध (द) इनमें से कोई नहीं

131. गउडवहो नामक महाकाव्य का प्रधान रस है-

(अ) वीर (ब) भयानक

(स) अदभुद् (द) श्रंृगार

132. लीलावई नामक महाकाव्य का नायक जिस प्रदेश का राजा है, वह है-

(अ) कन्नौज (ब) मेवाड़

(स) सिंहलद्वीप (द) प्रतिष्ठान

133. प्राकृत भाषा मंे मुक्तक काव्य का प्राचीन रूप प्राप्त होता है-

(अ) महाकाव्य में (ब) आगमसाहित्य में

(स) खंडकाव्य में (द) कथासाहित्य में

134. प्रियतम कल प्रवास पर जायेगा यह जानकर नायिका जिसके बढ़ जाने की कामना करती है, वह है-

(अ) निशा देवी (ब) भौंर

(स) प्रातःकाल (द) संध्या

135. सरल स्वभाव वाला व्यक्ति जिस व्यक्ति को अपने पास कभी नहीं रख सकता, वह है-

(अ) दुष्ट स्वभाव वाला (ब) क्रूर स्वभाव वाला

(स) टेढ़े स्वभाव वाला (द) मधुर स्वभाव वाला

136. वीरों के साहस को देखकर भयाक्रान्त होकर े अनुकूल कार्य करनेवाला है -

(अ) भाग्य (ब) धैर्य

(स) धर्म (द) पुरुषार्थ

137. विमलसूरि द्वारा लिखी गई रामचरित पर प्रथम जैन रचना है-

(अ) पउमचरियं (ब) आदि पुराण

(स) तुलसी रामायण (द) हरिवंश पुराण

138. सुरसुन्दरीचरियंके रचयिता हैं-

(अ) जिनेश्वर सूरि (ब) जिनचन्द्र सूरि

(स) धनेश्वर सूरि (द) जिनदŸा सूरि

139. सुरसुन्दरीचरियंजिस विधा का काव्य है, वह है-

(अ) प्रेमाख्यान (ब) काम कथा

(स) श्रृंगारिक ग्रन्थ (द) धार्मिक ग्रन्थ

140. धनेश्वरसूरि द्वारा रचित नायिका प्रधान काव्य है-

(अ) सुरसुन्दरीचरियं (ब) कुवलयमालाकहा

(स) समराइच्चकहा (द) नर्मदासुन्दरीचरियं

141. राजशेखर को जिस उपाधि से सम्मानित किया गया था, वह है-

(अ) नाट्यशास्त्री (ब) महाकवि

(स) श्रेष्ठ कवि (द) कविराज

142. लाट देश के राजा चन्द्रवर्मा की पुत्री मृगांकवती तथा विधाधरमल्ल के गुप्त विवाह को निरूपित करने वाली नाटिका का नाम है-

(अ) विद्धशालभंजिका (ब) बाल रामायण

(स) इनमंे से कोई नहीं (द) कर्पूरमंजरी

143.. कर्पूरमंजरी का दूसरा नाम है-

(अ) घनसारमंजरी (ब) अवंतिसुन्दरी

(स) सारंगिका (द) कुरंगिका

144. कर्पूरमंजरी में नायक राजा चन्द्रपाल की रानी का नाम है-

(अ) विभ्रमलेखा (ब) अवंतिसुन्दरी

(स) सारंगिका (द) कुरंगिका

.

145. सट्टक में आद्योपान्त प्रयुक्त होती है-

(अ) प्राकृत भाषा (ब) हिन्दी भाषा

(स) संस्कृत भाषा (द) इनमें से कोई नहीं

146. प्राकृत भाषा में रचित प्रथम स्वतंत्र कथा ग्रन्थ है-

(अ) वसुदेवहिण्डी (ब) तरंगवती

(स) समराइच्चकहा (द) तरंगलोला

147. वसुदेवहिण्डी नामक कथा में जिसके भ्रमण का वृतान्त वर्णित है, वह है-

(अ) विष्णु (ब) कृष्ण वासुदेव

(स) राम एवं रावण (द) कृष्ण के पिता वसुदेव

148. वसुदेवहिण्डी के प्रथम खण्ड में लम्भकों की संख्या हैंै◌ं-

(अ) 28 (ब) 29

(स) 72 (द) 71

149. कांदबरी के रचयिता हैं-

(अ) बाणभट्ट (ब) कालिदास

(स) श्रीहर्ष (द) महाकवि भास

150. प्रतिशोध की भावना को दर्शन की भाषा में कहा जाता है-

(अ) आलोचना (ब) निदान

(स) समाचारी (द) प्रायश्चित

उत्तर कुंजी

1	(ब)	11	(अ)	21	(द)	31	(द)	41	(ब)
2	(ब)	12	(अ)	22	(द)	32	(ब)	42	(ब)
3	(द)	13	(ब)	23	(अ)	33	(ब)	43	(अ)
4	(ब)	14	(ब)	24	(अ)	34	(स)	44	(द)
5	(अ)	15	(द)	25	(द)	35	(अ)	45	(ब)
6	(ब)	16	(अ)	26	(अ)	36	(अ)	46	(अ)
7	(अ)	17	(स)	27	(अ)	37	(द)	47	(स)
8	(अ)	18	(अ)	28	(द)	38	(द)	48	(स)
9	(अ)	19	(ब)	29	(ब)	39	(स)	49	(द)
10	(स)	20	(अ)	30	(द)	40	(द)	50	(ब)
51	(द)	61	(द)	71	(ब)	81	(द)	91	(द)
52	(अ)	62	(अ)	72	(स)	82	(द)	92	(द)
53	(द)	63	(अ)	73	(अ)	83	(ब)	93	(अ)
54	(अ)	64	(ब)	74	(स)	84	(द)	94	(द)
55	(स)	65	(ब)	75	(ब)	85	(ब)	95	(अ)
56	(स)	66	(अ)	76	(स)	86	(ब)	96	(स)
57	(ब)	67	(अ)	77	(अ)	87	(अ)	97	(अ)
58	(ब)	68	(द)	78	(अ)	88	(स)	98	(अ)
59	(अ)	69	(स)	79	(अ)	89	(स)	99	(स)
60	(ब)	70	(अ)	80	(अ)	90	(अ)	100	(ब)
101	(अ)	111	(द)	121	(ब)	131	(अ)	141	(द)
102	(द)	112	(ब)	122	(ब)	132	(द)	142	(अ)
103	(स)	113	(ब)	123	(द)	133	(ब)	143	(अ)
104	(अ)	114	(अ)	124	(द)	134	(अ)	144	(अ)
105	(द)	115	(अ)	125	(ब)	135	(स)	145	(अ)
106	(स)	116	(ब)	126	(स)	136	(अ)	146	(ब)
107	(ब)	117	(द)	127	(ब)	137	(अ)	147	(द)
108	(द)	118	(ब)	128	(अ)	138	(स)	148	(ब)
109	(स)	119	(ब)	129	(अ)	139	(अ)	149	(अ)
110	(स)	120	(ब)	130	(स)	140	(अ)	150	(ब)